International Double Blind Peer Reviewed, Refereed , Indexed , Multilingual-Multidisciplinary-High Impact Factor-Monthly-Research Journal Related to Higher Education For all Subject

ISSN 0974-2832 (Print), E-ISSN- 2320-5474,RNI RAJBIL 2009/29954

SHODH, SAMIKSHA AUR MULYANKAN

MARCH , 2022

Vol-1, ISSUE-03

IMPACT FACTOR- 6.115 (SJIF)

SHODH SAMIKSHA AUR MULYANKAN

Editor in Chief

Dr. Krishan Bir Singh

www.ugcjournal.com

Editor's Office
A- 215, Moti Nagar,
Street No.7
Queens Road
Jaipur- 302021, Rajasthan,
India

E-Mail:
www.ugcjournal@gmail.com

professor.kbsingh@gmail.com

SHODH SAMIKSHA AUR MULYANKAN

मुख्य सम्पादक – डॉ. कृष्णबीर सिंह का मानद पद कार्य पूर्णतः अवैतनिक है।

इस शोध पत्रिका के प्रकाशन, सम्पादन मुद्रण में पूर्णतः सावधानी बरती गई है। किसी भी प्रकार की त्रुटि महज मानवीय भूल मानी जाये।

शोध पत्र की समस्त जिम्मेदारी शोधपत्र लेखक की होगी।उक्त जर्नल में प्रकाशन हेतु भेजे गए पेपर सामग्री का सम्पूर्ण नैतिक दायित्व पेपर लेखक का होगा। मुख्य संपादक ,प्रकाशक ,मुद्रक , पिअर रिविव्यु मंडल जिम्मेदार नहीं होगा। लेखकों से अनुरोध है किसी भी प्रकार की साहित्यिक चोरी न करें।

समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर शहर ही होगा।

1. Editing of the research journal is processed without any remittance. **The selection and publication is done after recommendation of Peer Reviewed Team, Refereed and subject expert Team.**
2. Thoughts, language vision and example in published research paper are entirely of author of research paper. It is not necessary that both editor and editorial board are satisfied by the research paper. **The responsibility of the matter of research paper is entirely of author.**
3. Along with research paper it is compulsory to sent Membership form and copyright form. Both form can be downloaded from website i.e. **www.ugcjournal.com**
4. In any Condition if any National/International university denies to accept the research paper published in the journal then it is not the responsibility of Editor, Publisher and Manangement.
5. Before re-use of published research paper in any manner, it is compulsory to take written acceptance from Chief Editor unless it will be assumed as disobedience of copyright rules.
   In case of plagiarism, the entire moral responsibility of the paper material will rest with the author only.
6. **The entire moral responsibility of the paper material sent for publication in the said journal will be that of the paper author. Chief Editor, Publisher, Printer, Peer Review and Refereed Board will not be responsible.**

Authors are requested not to do any kind of plagiarism

7. All the legal undertaking related to this research journal are subjected to be hearable at jaipur jurisdiction only.

EDITORIAL BOARD

Patron
Prof. Kala Nath Shastri
(Rashtrapati Puraskar" For His Contribution To Sanskrit)
Prof. Dr. Alireza Heidari
Full Professor And Academic Tenure, USA

Chief Editor

Dr. Krishan Bir Singh

International Advisory Board
Aaeid M. S. Ayoub
Geotechnical Environmental Engineering
Uqbah bin Muhammad Iqbal
Postgraduate Researcher
Badreldin Mohamed Ahmed Abdulrahman
Associate Professor
Dr. Alexander N. LUKIN
Principal Research Scientist & Executive Director
Dr. U. C. Shukla
Chief Librarian and Assistant Professor
Dr. Abd El-Aleem Saad Soliman Desoky
Professor Assistant
Prof. Ubaldo Comite
Lecturer
Moustafa Mohamed Sabry Bakry
Dr Sajid Mahmood
Shameemul Haque

Associate Chief Editor
Ravindrajeet Kaur Arora
S. Bal Murgan
Dr. Sandeep Nadkarni
Dr. A Karnan
Dr. S.R. Boselin Prabhu
Deepika Vodnala
Dr. Kshitij Shinghal
Christo Ananth
Gopinath Palai
Dr. Neeta Gupta
Dr. Vinita Shukla
Harold Jan R. Terano
Dr Sajid Mahmood
Dr Pavan Mishra

Editor
Dr.H.B.Rathod
Dr. Dharamender Singh Chauhan,UOR,Jaipur
Dr.Govind Nath Chaudhary-Sanskrit- Bhagalpur
Dr.Naveen Gautam
Dr. Mohini Mehrotra
Dr. Arvind Vikram Singh
Dr. Suresh Singh Rathore
Dr.Kishori Bhagat
Dr.Murari Lal Dayma
Kamalnayan. B. Parmar
Dr.Deepak Sharma
Dr.Sanjay B Gore
Dr. A.karnan
Dr.Amita Verma
Dr . Ity Patni
Dr. Somya Choubey
Dr.Surinder Singh
Dr. Manoj S. Shekhawat,
Dr. Anshul Sharma
Dr. Ramesh Kumar Tandan
S N Joshi
Dr. Sant Ram Vaish
Bindu Chauhan
Dr. Vinod Sen
Dr. Sushila Kumari
Dr Indrani Singh Rai
Dr Abhishek Tiwari
Prof.S.K.Meena
Prof.Praveen Goswami
G Raghavendra Prasad

SHODH SAMIKSHA AUR MULYANKAN

Dr. Dnyaneshwar Jadhav
Akshey Bhargava
Dr. A. Dinesh Kumar
Dr. Pintu Kumar Maji
Dr Hanan Elzeblawy Hassan
Sandeep Kumar Kar
Dr.R.devi Priya
Dr.P.Thirunavukarasu
Dr. Srijit Biswas
Parul Agarwal
Dr. Preeti Patel
Archana More
Dr. Harish N
Dr. Seema Singh
Dr. Ram Singh Bhati
Dr. Pankaj Gupta
Dr Arvind Sharma
Dr. Ramesh Chandra Pathak
Dr. Ankush Gautam
Dr Markandey Dixit
Dr. Manoj Kumar
Ratko Pavlovi, Phd
Dr.S.Mohan
Dr Ramachandra C G
Dr.Sivakumar Somasundaram
Dr. Sanjeev Kumar
Dr. Padma S Rao
Dr Munish Singh Rana
Dr. Piyush Mani Maurya

Associate Editor

Dr. Yudhvir Redhu
Dr.Kiran B.R
Dr Richard Remedios
Dr. R Arul
Anand Nayyar
Dr . Ekhlaque Ahmad
Dr. Snehangsu Sinha
Dr Niraj Kumar Singh
Sandeep Kataria
Dr Abhishek Shukla
Somesh Kumar Dewangan
Amarendra Kumar Srivastav
Dr K Jayalakshmi
Dilip Kumar Jha

Assistant Editor

Jasvir Singh
Dr.pintu Kumar Maji
Dr. Soumya Mukherjee
Prof Ajay Gadicha
Ashutosh Tiwari
Gyanendra Pratap Singh
Jitendra Singh Goyal
Ashish Jaiswal
Hiten Barman
Dr. Priti Bala Sharma

Subject Expert

Dr. Jitendra Arolia
Dr. Suresh Singh Rathore
Dr.kishori Bhagat
Dr Mrs Vini Sharma
Ranjan Sarkar
Chiranji Lal Parihar
Dr. Lalit Kumar Sharma
Dr Amit Kumar
Santosh Kumar Jha
Dr . Ekhlaque Ahmad
Naveen Kumar Kakumanu
Dr. Chitra Tanwar
Jyotir Moy Chatterjee
Somesh Kumar Dewangan
Raffi Mohammed
Dr. Sunita Arya
Dr. Ram Singh Bhati
Dr. Janak Singh Meena
Dr. Neha Kalyani

SHODH SAMIKSHA AUR MULYANKAN

Dr. Rajeev Nayan Singh
Dr. Pankaj Rathore
Dr. Mahendra Parihar
Pradip Kumar Mukhopadhyay
Dr Vijay Gaikwad

Research Paper Reviewer

Dr. B H Kirdak
Amit Tiwari
Dr Dheeraj Negi
Dr. Meeta Shukla
Dr. Ranjana Rawat
Sonia Rathi
Dr.Anand Kumar
Dr.Pardeep Sharma
Anil Kumar
Dr. Deepa Dattatray Kuchekar
Dr Ade Santosh Ramchandra

Guest Editor

Dr. Lalit Kumar Sharma
Dr. Falguni S. Vansia

Chief Advisory Board

Ashok Kumar Nagarajan

Advisory Board

Dr. Naveen Kumar
Manoj Singh Shekhawat
Pranit Maruti Patil
Vishnu Narayan Mishra

SHODH SAMIKSHA AUR MULYANKAN

International Level Double Blind Peer Reviewed, Refereed, Indexed Research Journal, ISSN(Print)-0974-2832, E-ISSN-2320-5474,RNI-RAJBIL-2009/29954, Impact Factor-6.115(SJIF), March -2022,Vol-I, Issue-03

Research Paper -Education

माध्यमिक स्तर के उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

पावेल सल्तनत पठान

व्याख्याता, शिक्षा विभाग, टैगोर शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय केकड़ी, जिला अजमेर (राजस्थान)

सामान्य सारांश

विश्व के प्रत्येक प्राणी की कुछ न कुछ आकांक्षा होती है, विश्व का प्रत्येक व्यक्ति अपने कार्य के परिणाम को सही एवं सटीक जानकारी प्राप्त करना चाहता है, अध्यापक अपने विद्यार्थियों (उत्पादों) के शैक्षिक उपलब्धि (गुणवत्ता) की जानकारी के लिए मापन और मूल्यांकन की विविध प्रविधियों का प्रयोग कर सकते हैं क्योंकि आकांक्षा स्तर व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण पक्ष है तथा जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अतः शोधार्थी के मन में यह प्रश्न उत्पन्न हुआ कि क्या उच्च शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में अंतर है? इस प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने के लिए शोधकर्ता ने इस अध्ययन हेतु 200 उच्च शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों तथा 200 निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में लिया। उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि का प्रभाव उसमें विभिन्न पक्षों एवं आकांक्षा स्तर पर पड़ता है। छात्रों के आकांक्षा स्तर का ज्ञान हो जाने पर छात्रों के आकांक्षा स्तर निर्धारण में सही तरीके से निर्देशन एवं परामर्श दिया जा सके जिससे छात्रों के आत्मविश्वास में वृद्धि होगी तथा विद्यार्थियों में निम्न शैक्षिक उपलब्धि के कारण उत्पन्न कुंठा, तनाव एवं अवसाद को शिक्षकों एवं अभिभावकों द्वारा उचित निर्देशन व परामर्श देकर दूर किया जा सकता है, इस तरह विद्यार्थियों के सुसमायोजित व्यक्तित्व से सुसंगत समाज का निर्माण हो सकेगा।

मुख्य शब्द— माध्यमिक स्तर, उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि, आकांक्षा स्तर

SHODH SAMIKSHA AUR MULYANKAN

प्रस्तावना—

आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में यह कहना अतिशय नहीं होगा कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के लिए उनके व्यक्तित्व विकास के लिए उनके व्यक्तित्व के एवं अति महत्वपूर्ण पक्ष आकांक्षा स्तर पर भी ध्यान दिया जाए। अतः शिक्षा ही वह सशक्त माध्यम है जो किशोरों के सर्वांगीण विकास के लिए उत्तरदायी है, इसी संदर्भ में भारतीय शिक्षा आयोग (1964—66) के कथन से और अधिक स्पष्ट हो जाता है, ''कि भारत के भविष्य का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है''

शिक्षा के संबंध में एक उपयुक्त उदाहरण जापान का दिया जा सकता है जो द्वितीय विश्व युद्ध में दो परमाणु बमों का दंश झेलने के बाद भी आज अपनी अच्छी शिक्षा व्यवस्था एवं प्रशासन के कारण ही विश्व में एक नई शक्ति के रूप में पुनः स्थापित हुआ।

शिक्षा मनोविज्ञान एक उभरता हुआ विषय है जिससे अपनी आवश्यकता एवं उपयोगिता से विश्व को परिचित कराया है। आज मनोविज्ञान के विकास के कारण ही शिक्षा का केंद्र बिंदु बालक हो गया है। शिक्षा मनोविज्ञान के विकास के पूर्व तक शिक्षक को शिक्षा में केंद्रीय स्थान प्राप्त था। वर्तमान समय में मनुष्य को एक विवेकशील मनो—सामाजिक प्राणी माना जाता है, जबकि मनुष्य जन्म से न तो सामाजिक प्राणी है और न ही असामाजिक प्राणी। वह समाज के साथ अंतःक्रिया करके सामाजिक प्राणी बनता है। व्यक्तियों के व्यक्तित्व के निर्धारण में आकांक्षा का महत्वपूर्ण स्थान होता है। आकांक्षा के समानार्थी के रूप में महत्वकांक्षा, इच्छा एवं लालसा जैसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है। व्यक्तियों की समस्त चेष्टाओं और भावनाओं को उत्पन्न करने की मन की सूक्ष्म शक्तियों शाब्दिक अर्थ में

''इच्छा'' कहा जाता है। व्यक्तियों की जागरूक चेतना ही इच्छा व आकांक्षा है, जो अपने एक रूप में मनुष्य में अपरिमित उत्साह भर कर उसे सक्रिय बनाती है। व्यक्तियों के उत्साहहीन मन के द्वारा किया गया प्रयास असफल हो जाता है, इसलिए काम करने से पहले अभिप्रेरित वातावरण तैयार करना आवश्यक होता है, जिसे आकांक्षा कहा जाता है।

प्राय देखा जाता है कि आशावादी व्यक्ति का आकांक्षा स्तर सदैव ऊंचा होता है जबकि निराशावादी व्यक्ति का आकांक्षा स्तर नीचा होता है इसी प्रकार इसकी असफलता का भी उस पर प्रभाव पड़ता है। इसके माध्यम से प्रायः लक्ष्य निर्धारण कर अध्ययन किया जाता है। इसे एक प्रकार से सामाजिक प्रेरक भी माना जाता है क्योंकि जिस संस्कृति में व्यक्ति का पालन–पोषण होता है और उसी के अनुरूप अपने लक्ष्यों का निर्धारण करता है। आकांक्षा का परिचय सबसे पहले लेविन की शिश्या डेम्बो ने कराया था किंतु इस दिशा में गहन अध्ययन के पश्चात् विचार प्रकट करने का श्रेय हांपी को है। हांपी ने अपने प्रयोगात्मक अध्ययन के आधार पर बताया कि लक्ष्य निर्धारण को व्यवहार के अनेक कारक प्रभावित करते हैं। इस पर व्यैक्तिक भिन्नताओं का भी प्रभाव पड़ता है क्योंकि कुछ व्यक्तियों का आकांक्षा स्तर सदैव उच्च होता है और कुछ का निम्न।

आकांक्षा स्तर को निम्न घटक प्रभावित करते हैं–

आकांक्षा स्तर पर समूह तथा सामूहिक कारकों का भी प्रभाव पड़ता है व्यक्ति हमेशा अपने कार्यों की तुलना दूसरों से करके अपने को समायोजित करता है।

कार्य की सफलता या असफलता आकांक्षा स्तर को उच्च व निम्न श्रेणी का बनाती है। यदि विद्यार्थियों को सफलता मिल जाती है तो वह आगे होने वाली परीक्षाओं को सुगमता से उत्तीर्ण कर लेता है और असफलता मिलने पर विद्यार्थी का उत्साह कम हो जाता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व–

अध्ययन का शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक दृष्टि से विशेष महत्व है, प्रारंभिक शिक्षा को यदि शिक्षा की आधारशिला कहा जाता है, तो माध्यमिक शिक्षा को उसका भवन, तो वहीं उच्च शिक्षा को उसका मुकुट कहा जाए तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने विजन 2020 में कहा कि भारत में विकास की धुरी युवा हैं और ये युवा तभी विकसित देश बना सकते हैं जब ये अपनी मनोवृति को बदलें, हम तभी विकसित हो सकते हैं जब तक हम अपने मे आकांक्षा स्तर के उच्च स्तर को विकसित नहीं करेंगे, तब तक भारत को विकसित देश के रूप में देखने की इच्छा किताबों में बंद होकर ही रह जाएगी। किशोर शारीरिक एवं मानसिक रूप से बहुत ही शक्तिशाली एवं सक्रिय होते हैं पर आकांक्षा स्तर के दृष्टिकोण से स्थिर।

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को संवेगात्मक अस्थिरता, तनाव का सामना करना पड़ता है क्योंकि उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले किशोर समाज में स्थान व कैरियर के प्रति चिंतित रहते हैं। यदि किशोरों के आकांक्षा स्तर का विकास सही ढंग से नहीं होगा तो वह सही निर्णय लेने में सक्षम नहीं होंगे। किशोरों की समस्याओं की पहचान करके तथा उनके आकांक्षा स्तर का विकास करके लक्ष्य निर्धारण में उनका मार्गदर्शन किया जा सकता है।

समस्या कथन–

माध्यमिक स्तर के उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

शोध में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण–

उच्च माध्यमिक स्तर– प्रस्तुत शोध में उच्च माध्यमिक स्तर से आशय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर से मान्यता प्राप्त विद्यालयों के कक्षा–11 में अध्ययनरत विद्यार्थियों से है।

उच्च शैक्षिक उपलब्धि– प्रस्तुत शोध में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर से मान्यता प्राप्त विद्यालयों में कक्षा 11–12 में अध्ययनरत विद्यार्थियों के कक्षा–10 के प्राप्तांक प्रतिशत के आधार पर 75 प्रतिषत प्राप्तांक या 75 प्रतिषत से अधिक प्राप्तांक पाने वाले विद्यार्थी अर्थात् सम्मान सहित उत्तीर्ण विद्यार्थियों को उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थी मानकर अध्ययन किया गया है।

निम्न शैक्षिक उपलब्धि– प्रस्तुत शोध में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर से मान्यता प्राप्त विद्यालयों में कक्षा–11 में अध्ययनरत विद्यार्थियों के कक्षा–10 के प्राप्तांक प्रतिशत के आधार पर 33 प्रतिशत से अधिक पर 60 प्रतिषत प्राप्तांक से कम प्राप्तांक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अर्थात् तृतीय श्रेणी में उत्तीर्ण विद्यार्थियों को निम्न शैक्षिक उपलब्धि का विद्यार्थी मानकर अध्ययन किया गया है।

आकांक्षा स्तर– प्रस्तुत शोध में आकांक्षा स्तर के मानकीकृत परीक्षण पर प्राप्त प्राप्तांकों को आकांक्षा स्तर माना गया है, जिसमें विद्यार्थियों की लक्ष्य भिन्नता, उपलब्धि भिन्नता एवं लक्ष्य तक पहुंचने से संबंधित पक्षों का अध्ययन किया गया है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य–

शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्न है–

- उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर के माध्य फलांको का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर के आयाम लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांकों के माध्य

फलांको का तुलनात्मक अध्ययन करना।

- उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर के आयाम उपलब्धि भिन्नता प्राप्तांकों के माध्य फलांको का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाऐं–

शोध अध्ययन की शोध परिकल्पनाऐं निम्न है–

H1 उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर के माध्य फलांको सार्थक में अंतर होता है।

H2 उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर के आयाम स्तर के मध्य फलांको में सार्थक में अंतर होता है।

H3 उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर के आयाम उपलब्धि भिन्नता के मध्य फलांको में सार्थक अंतर होता है।

अध्ययन का परिसीमांकन–

प्रस्तुत शोध बूंदी जिले में माध्यमिक शिक्षा विभाग अजमेर, राजस्थान से मान्यता प्राप्त विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर के कक्षा–11 के उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के अध्ययन तक परिसीमित है।

शोध विषय अध्ययन की शोध विधि–

प्रस्तुत शोध अध्ययन स्वरूप के अनुसार मात्रात्मक शोध है जबकि अनुसंधान की प्र.ति के आधार पर वर्णनात्मक अनुसंधान के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का शोध कहा जा सकता है।

जनसंख्या (Population)- प्रस्तुत शोध में जनसंख्या से आशय माध्यमिक शिक्षा विभाग, अजमेर से मान्यता प्राप्त विद्यालयों से उच्च माध्यमिक स्तर के कक्षा–11 के उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले समस्त विद्यार्थियों से है।

न्यादर्श (Sample)- प्रस्तुत शोध में बूंदी जिले के माध्यमिक शिक्षा विभाग, अजमेर से मान्यता प्राप्त विद्यालयों से उच्च माध्यमिक स्तर के कक्षा–11 के उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों का चयन अध्ययन के न्यादर्श के रूप में किया गया।

न्यादर्श विधियां (Sample Techniques)- प्रस्तुत शोध अध्ययन में साधारण या.च्छिक न्यादर्शन विधि से विद्यालयों का तथा उद्देश्यपूर्ण न्यादर्शन विधि से विद्यार्थियों का चयन किया गया।

न्यादर्श का आकार– प्रस्तुत शोध में बूंदी जिले के माध्यमिक शिक्षा विभाग, अजमेर राजस्थान से मान्यता प्राप्त विद्यालयों से उच्च माध्यमिक स्तर के कक्षा–11 के 400 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया, जिसमें क्रमशः 200–200 उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों का चयन कर अध्ययन किया गया।

सांख्यिकीय प्रविधियां– शोध अध्ययन में प्राप्तांकों के विश्लेषण के लिए माध्य, मानक विचलन तथा टी–अनुपात का प्रयोग किया गया। ''टी'' परीक्षण का मान निम्नलिखित सूत्र की सहायता से ज्ञात किया गया है–

$$t = \frac{M_1 - M_2}{\sigma D}$$

M1 = प्रथम समूह का मध्यमान

M2 = द्वितीय समूह का मध्यमान

? D = दो मध्यमानो के अंतर की मानक त्रुटि

सांख्यिकीय प्रविधियां– प्रस्तुत शोध में सार्थकता स्तर पर .05 निर्धारित किया गया।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

H1 उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर के माध्य फलांको में सार्थक अंतर है।

- उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर के माध्य फलांको में सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी–1

उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर के "t" परीक्षण मान के परिणामों का सारांश

समूह	संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (SD)	दो मध्यमानो के बीच अंतर (D)
उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थी	200	5.09	2.66	0. 6900
निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थी	200	4.40	2.74	

सारणी–1 के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि परिगणित t = 2.550 का मान .05 स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक न्यूनतम तालिका मान का df = 3.98 के लिए .05 = 1.97 से अधिक है इसलिए यह .05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना की उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर के माध्य फलांको में सार्थक अंतर नहीं है,

SHODH SAMIKSHA AUR MULYANKAN

अस्वीकार की जाती है। अतः शोध परिकल्पना उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर के माध्य फलांको में सार्थक अंतर है, स्वीकार की जाती है।

H2 उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर के आयाम लक्ष्य भिन्नता के माध्य फलांको में सार्थक अंतर है।

♦ उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर के आयाम लक्ष्य भिन्नता के माध्य फलांको में सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी–2

उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर के आयाम लक्ष्य भिन्नता के 't' परीक्षण मान के परिणामों का सारांश

समूह	संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (SD)	दो मध्यमानो के बीच अंतर (D)
उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थी	200	2.70	2.18	0. 42
निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थी	200	2.28	1.85	

सारणी–2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि परिगणित t = 2.076 का मान .05 स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक न्यूनतम तालिका मान df = 3.98 के लिए .05 = 1.97 से अधिक है, इसलिए यह .05 स्तर पर सार्थक है। शून्य परिकल्पना कि उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर के आयाम लक्ष्य भिन्नता के माध्य फलांको में सार्थक अंतर नहीं है, अस्वीकार की जाती है। अतः शोध परिकल्पना की उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर के आयाम लक्ष्य भिन्नता के माध्य फलांको में सार्थक अंतर स्वीकृत होती है।

H3 उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर के आयाम उपलब्धि भिन्नता के माध्य फलांको में सार्थक अंतर है।

♦ उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर के आयाम उपलब्धि भिन्नता के माध्य फलांको में सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी–3

उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर के श्जश परीक्षण के परिणामों का सारांश

समूह	संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (SD)	दो मध्यमानो के बीच अंतर (D)
उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थी	200	–1.24	2.58	0. 48
निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थी	200	–.76	2.58	

सारणी–3 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि परिगणित t = 2.006 का मान .05 स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक न्यूनतम तालिका मान df = 3.98 के लिए .05 व 1.97 से अधिक है, इसलिए यह .05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना की उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर के आयाम उपलब्धि भिन्नता के माध्य फलाको में सार्थक अंतर नहीं है, अस्वीकार की जाती है। शोध परिकल्पना की उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर के आयाम उपलब्धि भिन्नता के माध्य फलांको में सार्थक अंतर है, निरस्त नहीं की जा सकती है। उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों से अधिक है, सांख्यिकी परीक्षण परिणाम में भी सार्थक अंतर पाया गया।

शोध निष्कर्ष–

उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर के माध्य फलांको में सार्थक अंतर पाया गया। उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर की अपेक्षा अधिक पाया गया तथा सांख्यिकीय रूप में भी सार्थक पाया गया।

उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर के आयाम लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांक के

SHODH SAMIKSHA AUR MULYANKAN

माध्य फलांको में सार्थक अंतर पाया गया। उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर के आयाम लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांक की अपेक्षा अधिक पाया गया।

उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर के आयाम उपलब्धि भिन्नता प्राप्तांक के माध्य फलांको में सार्थक अंतर नहीं पाया गया, उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर के आयाम उपलब्धि भिन्नता प्राप्तांक की अपेक्षा अधिक पाया गया लेकिन सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं पाया गया।

शैक्षिक निहितार्थ–

आज के समय की यह मांग व आवश्यकता है कि विद्यालयों के पाठ्यक्रम में आकांक्षा स्तर के विकास से संबंधि ात गतिविधियों को शामिल किया जाए, शिक्षकों को इस संबंध ा में विशिष्ट प्रशिक्षण दिया जाए, अभिभावकों को उनके पाल्यो में उचित आकांक्षा स्तर का विकास करने हेतु उनसे सहयोग लिया जाए तथा उन्हें प्रोत्साहित व प्रशिक्षित किया जाए तथा इन सभी गतिविधियों में निम्न शैक्षिक उपलब्धि के छात्र–छात्राओं को विशिष्ट प्रोत्साहन दिया जाए। छात्रों को उनकी क्षमता एवं योग्यता के अनुसार आकांक्षा स्तर के निर्धारण के प्रयास किए जाने चाहिए, जिससे राष्ट्र के लिए अच्छे नागरिक तैयार किए जा सके।

SHODH SAMIKSHA AUR MULYANKAN

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 आस्थाना, विपिन, अस्थाना, विजया एवं अन्य (2008)– शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकीय, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन

2 गुप्ता, एस.पी. एवं गुप्ता अलका (2013)– अनुसंधान संदर्शिका, संप्रत्यय कार्यविधियां, प्रविधियां, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन

3 लाल, रमन बिहारी एवं शर्मा, .ष्णकांत (2013)– भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास समस्याऐं मेरठ, आर. लाल बुक डिपो प्रकाशक

4 मंगल, एस.के. (2010)– शिक्षा मनोविज्ञान, दिल्ली पी.एच.आई. लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड

5 शर्मा, आर.ए. (2013)– शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, मेरठ, आर. लाल बुक डिपो प्रकाशक

6 श्रीवास्तव, डी.एन. (2005)– सांख्यिकीय एवं मापन, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर

7 भटनागर, ए.बी. एवं भटनागर, मीनाक्षी (2013)– मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, मेरठ आर. लाल बुक डिपो प्रकाशन

8 www.sodhganga@inflibnet.nic.in